'फ्रैंड्स औफ कोकोनट ट्री'

औरतों के रोजगार का जरीया

नारियल विकास बोर्ड जो 'फ्रैंड्स औफ कोकोनट ट्री' ट्रेनिंग कार्यक्रम चलाता है, उस की काफी अहमियत है. नारियल किसानों और गांवदेहात के बेरोजगार नौजवानों ने इस कार्यक्रम के प्रति जबरदस्त दिलचस्पी दिखाई है. इस कार्यक्रम का खास मकसद नारियल तोड़ाई और पौध संरक्षण कामों के लिए ट्रेनिंग पाए लोगों की कमी की समस्या का हल निकालना है.

केरल के कासरगोड़ जिले में केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के कृषि विज्ञान केंद्र में हुई 'फ्रैंड्स औफ कोकोनट ट्री' ट्रेनिंग कार्यक्रम में औरतों ने बेहद दिलचस्पी दिखाई. कुल 165 औरतों ने, जिन में से ज्यादातर घरबार संभालने वाली थीं, ट्रेनिंग ले कर ताड़ारोहण जैसे मर्दों के दबदबे वाले पेशे को अपनाया है.

इस ट्रेनिंग कार्यक्रम से पहले औरतें पेड़ पर चढ़ने की मुश्किलों और जोखिम के चलते इस पेशे से दूर रहती थीं. लेकिन पेड़ पर चढ़ने के लिए यंत्र का उपयोग करने व यंत्र पर सुरक्षा उपकरण लगाने से ये मुश्किलें अब दूर हो गई हैं.

इस ट्रेनिंग कार्यक्रम की एक खासीयत यह है कि इस में यंत्र के सहारे पेड़ पर चढ़ने और नारियल की संकरण तकनीक की भी ट्रेनिंग दी जाती है.

कासरगोड़ जिले में ट्रेनिंग पाई 3 औरतें 'फ्रैंड्स औफ कोकोनट ट्री' कार्यक्रम के जरीए पेड़ पर यंत्र के सहारे चढ़ने में ट्रेनिंग लेने के बाद नारियल पेड़ों में संकरण का काम कर के अपनी रोजीरोटी कमा रही हैं.

पैवालिका कासरगोड़ जिले का एक गांव है. यहां सुपारी की खेती ज्यादा होती है, इसलिए यहां की रहने वाली कृष्णवेणी को तोड़ाई, पेड़ के शिखर की सफाई वगैरह काम करने के लिए ज्यादा नारियल के पेड़ नहीं मिलते थे. वे महज 12 से 15 नारियल के पेड़ों पर ही चढ़ती थीं. उन की पारिवारिक हालत ऐसी थी कि काम की तलाश में वे दूसरी पंचायतों में भी नहीं जा पाती थीं. फिर भी उन्होंने इस पेशे में डटे रहने की ठान ली.

इस ट्रेनिंग कार्यक्रम में भाग लेने से पहले 16 और 14 साल के 2 बच्चों की मां बिंदु एक रैस्टोरेंट में काम कर के रोजाना

* सुनील शर्मा

कठिन से कठिन काम आज की औरत के लिए बाएं हाथ का खेल साबित हो रहे हैं. कल तक कोई सोच भी नहीं सकता था कि नारियल के ऊंचे पेड़ों की चोटी तक लंबी चोटी वाली महिलाएं पहुंच सकती हैं, मगर पतली कमर व नाजुक बदन वाली औरतों ने यह कारनामा कर दिखाया है. वाकई नए जमाने की नारी गजब ढा रही है, काश उस की आबरू भी हमेशा महफूज रह पाती.

100 रुपए कमाती थीं. 19 व 14 साल के 2 बच्चों की मां शारदा भी मजदूरी कर के रोजाना 120 रुपए कमाती थीं, पर 'फ्रैंड्स औफ कोकोनट ट्री' ट्रेनिंग कार्यक्रम में भाग लेने के बाद वे इसे अपना पेशा बना कर अच्छी कमाई कर रही हैं. कुछ दिनों बाद 3 और औरतें भी इन के साथ काम करने लगीं और अब इन का एक ग्रुप बन गया है.

नारियल संकरण तकनीक में पेड़ के शिखर यानी चोटी पर ताजा खिले फूलों के गुच्छों पर काम किया जाता है. इस के लिए सब्र और मजबूत शरीर की जरूरत होती है. कृत्रिम परागण से संकर नारियल पेड़ों का उत्पादन किया जाता है.

इस तकनीक के कई चरण होते हैं. पहला चरण है पराग इकट्ठा करना, दूसरा फूलों के गुच्छों से नर फूलों को निकालना और तीसरा फूलों के गुच्छों को थैली से ढकना. इस के बाद मादा फूलों के ग्रहणशील चरण तय कर के सही समय पर परागकण उस पर डालना होता है. फिर अंतिम फूल ग्रहणशील स्थिति में पहुंचने तक यह काम दोहराना होता है. परागण निबटने के बाद थैली निकाल दी जाती है.

इस काम के लिए नारियल पेड़ पर चढ़ने की कुशलता, नारियल के पुष्पों के बारे में अच्छी जानकारी व परागण काम में महारत जरूरी होती है. 1 महीने के दौरान उन्हें परागण का काम पूरा करने के लिए 8 से 10 बार पेड़ पर चढ़नाउतरना पड़ता है.

कम समय में ही इन औरतों ने संकरण का काम बखूबी करने में महारथ हासिल कर ली है. इन औरतों के मुताबिक इस काम से उन्हें जो आर्थिक सुरक्षा और आत्मनिर्भरता मिली है, उस से समाज में उन का आत्मसम्मान बढ़ा है. ■